आदित्य खाण्डवे - परिचय

आदित्य मोहन खाण्डवेजी की शास्त्रीय संगीत शिक्षा का प्रारंभ उनकी माता , ग्वालियर घरानेकी सुश्री विद्या खाण्डवे ने किया . मात्र १३ साल के उम्रमे ही आदित्य को जयपुर घराने की विधिवत तालीम घरानेके दिग्गज स्व. पं. रत्नाकर पईजी से शुरू हुयी. उस पश्चात उन्हें अभी जयपुर - अत्रोली घरानेकी अर्धव्यु गानयोगिनी श्रीमती धोंडूताई कुलकर्णी जी से तालीम पाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है. आदित्य देश के उन गिने चुने युवा कलाकारों में से है जो जयपुर - अत्रोली घराने जैसी कठिन शैली को आत्मसात करने की कोशिश कर रहे है. सौभाग्यवश , सुश्री धोंडूताई जी से आदित्य को घरानेकी समृद्ध परंपरा विरासत में मिल रही है.

ख़याल गायन की तालीम पारंपरिक गुरुकुल पद्धतीसे ले कर आदित्य ने अत्यंत परिश्रमपूर्वक अपनी गायकी विकसित की है. रागोंके शुद्ध एवं सुक्ष्म स्वरुप , लयकारी का सटीक लहेजा , अप्रतिम स्वर लगाव, सुमधुर आवाज आदि जयपुर घरानेकी खासियत आदित्यने अथक रियाज़ करके अपने गायकी में आत्मसात की है. शुद्ध राग स्वरुप में सौंदर्य की अनुभूति यह आदित्य के गायन की पहेचान है . ख़याल गायन सिर्फ , मधुर स्वर , तेज तानकारी, चमत्कृति ही नहीं बल्कि रागविद्या,स्वरविद्या और तालविद्या के सुन्दर मिलाफ की अनुभव आदित्य अपनी गायन में श्रोतओंको करवाते है. अदित्यके गायन में ताल अंग और तबले के साथ लयकारी और तानकारी की सहजता भी उनके गायकी की विशेषता है.

आदित्य की शास्त्रीय संगीत की नीव इतनी मजबूत होने के कारण वे उपशास्त्रीय संगीत भी सहजतासे पेश करते है. उन्हें अपनी माताजी द्वारा स्व. पं. राजाभाऊ कोगजे से बनारस ढंग की ठुमरी सिखने का अवसर भी प्राप्त हुवा.

आदित्य को इतनी कम उम्र में ही अनेक सन्मान और पुरस्कार प्राप्त है. " सुरमणि " उपाधि , पं. मल्लिकार्जुन मंसूर युवा पुरस्कार - २०११, वैदिक हेरिटेज का आचार्य विश्वनाथ देवशर्मा फौंडेशन पुरस्कार आदि इनमेसे कुछ है.